बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 149/2026) **Year: 8th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 6.03.2026**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ ग्रीष्म ऋतु हेतु चौलाई, भिंडी, लोबिया, कुल्फा तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों की बुआई कर दें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखने के लिए काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग करें। ➢ फसलों को संभावी महू के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ ग्रीष्म कालीन टमाटर, बैगन एवं मिर्च की रोपाई कर दें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** ➢ इस समय बढ़ते तापमान के दृष्टिगत गेहूँ की फसल में समय समय पर पानी लगाना आवश्यक है! फसल की अवस्था एवं मृदा के अनुरूप एक निशिचित अन्तराल पर पानी लगाना लाभदायक होता है। ➢ दिन के बढते तापमान के कारण होने वाले नुक्सान से बचने के लिए किसानो को पोटेशियम नाईट्रेट का १–२ प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए। ➢ समय से बोयी गयी सरसों की फसल अब परिपक्वताके करीब है ! इसकी समय पर कटाई सुनिश्चित की जानी चाहिए । ➢ खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू कर दें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें। ➢ इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी०ए०पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए । बीजों की बोआई अगर सीडड्रिल से की जाए तो अच्छा रहता है। ➢ इस तरह से खाद एवं बीज दोनों मिट्टी में एक साथ यथा स्थान दिया जा सकता ह।बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है। ➢ १ किग्रा बीज के लिए ४ ग्राम राईजोबियम कल्चर या ४–६ मिली तरल राईजोबियम को १० प्रतिशत गुड़ के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें! उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें।

		मृदा.प्रबंधन ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवष्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाष का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ (जायद मूंग एवं अन्य फसलों की बुवाई हेतु कृषि आदानों की व्यवस्था पूर्व में करना उचित होगा।
4-	**कीट-प्रबंधन**	➢ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0. 15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।

6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ इस माह किसान भाइयों को गर्मी से पौधों की सुरक्षा तथा सिंचाई नालियों की मरम्मत कर लेना चाहिए। ➢ इस महीने में गर्मी की बढ़ोतरी के कारण पेड़ों को डबल रिंग पद्धति से 7 से 10 दिनों के अंतराल में सिंचाईं करें। ➢ फलदार पौधों के थालों में घास फूस या भूसे का पलवार के रूप में प्रयोग करें जिससे कि वाष्पोत्सर्जन के द्वारा होने वाले पानी के झरण को रोका जा सके। ➢ आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु प्रोफेनोफॉस 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घुलनशील गंधक 2.0 ग्राम अथवा डाइनोकैप 1.0 मि.ली. की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ काला सड़न या आन्तरिक सड़न के नियंत्रण के लिए बोरैक्स 10 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ मार्च माह में वानिकी पौधशाला में पौधारोपण सत्र की मांग की आपूर्ति करने के लिए कार्य योजना जैसे पौधशाला में अंकुरण बेड और पॉलीबाग भरने के लिया ग्रोइंग मीडिया इत्यादि तैयार करें। ➢ अंकुरण हेतु अंकुरण बेड (1 मीटर चौड़ा और 10 मीटर लंबा) तैयार करें। ➢ पॉलीबैग भरने हेतु ग्रोइंग मीडिया बनाने के लिए छनी मिट्टी तथा सड़ी हुई गोबर की खाद का 2 : 1 के अनुपात में मिश्रण बनायें। ➢ पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ सायंकाल में करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पश्चात् पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की आवश्कतानुसार सिंचाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार